"मेरा सत्य मैं ही हूं।"

(20.05.2022)

सत्य और असत्य
एक दिन दोनों ही
सामने आ खड़े हुए
तकरार करने लगे।

सत्य बोला वत्स !
अकड़ के लिए नहीं,
बल्कि आत्मसम्मान हेतु
हमेशा मुझे ही चुना करो।

असत्य बोला मेरे भाई!
स्वाभिमान का आचार
अगर डाल भी लिया तो
अचारसंहिता के कारण
कभी खा भी ना पाओगे।
किसी ने आज तक क्या सत्य
को कभी पूर्णतः है पाया?
तो मुझे ही चुनो क्योंकि
मैं ही हमेशा से काम आया।

दोनों के तर्क वितर्क देख
कर असमंज में तो था ही
भ्रमित भाव में आते ही
लिख दिया अनिश्चित लेख
दोनों को ही चुन लिया
और भविष्य के लिए
सिरदर्द मोल ले लिया।

अंतर्मन जंग का मैदान था
सत्य तो कुछ शांत सा था
अक्सर बोरियत में ही था
परंतु असत्य हमेशा से ही
सत्य को उंगली करता था
मजेदार सा लगने लगा था
कभी प्रलोभन के कारण,
और कभी डर से ही विवश
प्रेरित सा करने लगा था।

इसी खींचा तानी में राजीव
एक युग पीछे छोड़ आया
और सब उलट पलट गया
सत्य ने असत्य को अपनाया
और अर्धसत्य सा हो गया।

अंतरात्मा विचलित सी थी
फिर एक दिन आवाज आई
सत्य नहीं गुरु सत्यवादी बन
क्योंकि तेरे शब्द सत्य नहीं
तेरे कर्म निर्धारित करेंगे कि
तेरा सत्य तो तुं खुद ही है।